अनुच्छेद संग्रह

अनुच्छेद लेखन – परिचय

अनुच्छेद-लेखन

किसी भी एक वाक्य, सूक्ति या काव्य-पंक्ति के विषय में कुछ पंक्तियाँ लिखना 'अनुच्छेद-लेखन' कहलाता है। एक अनुच्छेद में एक विचार या भाव का ही विस्तार किया जाता है। यह निबंध का ही छोटा स्वरूप है। निबंध के अंदर विषय पर विस्तार से लिखा जाता है। इसे दोहे, पदों, उदाहरणों इत्यादि के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। इन्हीं सबको अनुच्छेद में बहुत ही संक्षेप रूप में लिखा जाता है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक हैः

1. अनुच्छेद सीमित शब्दों में लिखा जाता है।

2. यह मूल विषय पर हीं केन्द्रित रहते हैं, अपने आप में पूर्ण रहते हैं।

3. इनमें भूमिका और निष्कर्ष देने की आवश्यकता नहीं होती है।

4. इनमें अनावश्यक प्रसंग नहीं होने चाहिए।

5. अनुच्छेदों के बीच तारतभ्य तथा क्रमबद्धता होनी चाहिए।

6. विषय का फैलाव नहीं होना चाहिए।

7. रोचकता और मन-रमाने की शक्ति होनी चाहिए।

8. विषय को 10-12 वाक्यों या 90-100 शब्दों में बाँधना चाहिए।

9. वाक्य छोटे व आपस में जुड़े होने चाहिए।

10. उदाहरणों के केवल संकेत मात्र दिए जाने चाहिए, इनका विस्तार नहीं होना चाहिए।

समय का सदुपयोग

संकेत बिन्दु- समय की परख, समय के महत्व से सफलता, समय की पालक प्रकृति

मानव जीवन अमूल्य है फिर भी उसके लिए समय महत्वूर्ण है। जो व्यक्ति उचित समय पर उचित कार्य करने की योजना बनाते हैं वे ही समय के महत्व को समझते हैं। कहा जाता है समय को आप नष्ट करो, समय आपको नष्ट कर देगा। समय किसी के लिए रूकता नहीं जो समय का सम्मान करना जानता है वह

अपनी शक्ति को कई गुना बढ़ा लेता है। समय का सद्पयोग करने से जीवन में निश्चिंतता आती है। सब काम सुचारू रूप से होते चले जाते हैं। प्रत्येक कार्य के लिए समय मिल जाता है चित्त शांत एवं प्रसन्न रहता है। सम्पूर्ण प्रकृति भी समय का पालन करती है तो मनुष्य को तो इसका अनुसरण करना ही चाहिए। जीवन का एक एक पल मूल्यवान है इसे बेकार नही गंवाना चाहिए।

एक बार गाँधीजी से किसी ने पूछा कि आप जीवन की सफलता किसे मानते हैं। शिक्षा, शक्ति अथवा धन को। गाँधीजी ने उत्तर दिया ये वस्तुएँ जीवन को सफल बनाने में सहायक अवश्य है परन्तु सबसे महत्वपूर्ण है 'समय की परख'। जिसने समय की परख सीखली उसने जीने की कला सीख ली। तुलसीदास जी ने कहा था-

का वर्षा जब कृषी सुखानी। समय चूकि पुनि का पछितानी

प्रदूषण

मनुष्य ने जब से आँखे खोली हैं तब से उसने अपने को प्रकृति की गोद में पाया है। लेकिन आज जनसंख्या का विस्फोट के कारण विभिन्न प्रकार की समस्याएँ पनप रही हैं। इसमें प्रदूषण की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है। इसे कलियुग का दानव भी कहा जा सकता है जो सम्पूर्ण सृष्टि को निगल रहा है। आवश्यकता पूर्ति के लिए निरंतर बढ़ते उद्योग विकास के साथ प्रदूषण के जन्मदाता भी है।

प्रदूषण चाहे वह वायु, ध्वनि, जल, स्थल कोई भी हो सभी नुकसान देने वाले, कष्टकारी हैं। कल कारखानों से निकलने वाला धुआँ वायु को दूषित करता है उसके रसायन गंदे जल से नदियों को प्रदूषित करते हैं इससे अनेकों बिमारियाँ हो जाती हैं।

जगह जगह गंदगी के ढेर एवं कटते वृक्ष प्रदूषण को बढ़ाता है साथ ही शुद्ध व शांत वातारण समाप्त हो रहा है। पर्यावरण को शुद्ध एवं संतुलित बनाने के लिए आवश्यक है प्राकृतिक संतुलन की। इसके लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाए जाएँ मानवीय आदतों में सुधार एवं अज्ञानता को दूर करने के प्रयास किएँ जाएँ।

दूषित वायु, दूषित जल कैसे हो जीवन मंगल

क्षीण आयु क्षुब्ध जल कैसे हो जन्म सफल

मुझे अपने देश पर गर्व है

बसते वसुधा पर देश कई, जिनकी सुषमा संविशेष नई।

पर भारत की गुरूता इतनी, इस मूतल पर न कही जितनी

भारत विश्व का सातवाँ बड़ा देश है। यहाँ हिमालय पर्वत मुकुट के समान है तो दक्षिण में हिंद महासागर इसके चरणों को धो रहा है। गंगा जैसी पावन नदियां धरती को उपजाऊ बनाती हैं। यहाँ कहीं पहाड़ हैं, तो कहीं वन, कहीं मरूस्थल हैं तो कही उपजाऊ भूमि। छः ऋतुओं का क्रम निरंतर चलता रहता है। सूर्य की चमक,

चाँद की रोशनी, बादलों का उमड़ घुमड़ करना-प्रकृति का हर रूप यहाँ हमें देखने को मिलता है। ये ही नहीं यहाँ का प्राचीन इतिहास भी गौरव पूर्ण है। अनेकों वीर वीरागंनाएँ साधु सन्तों ऋषि- महर्षियों ने इस धरती की महिमा को उजागर किया है। विभिन्न संस्कृतियाँ तथा धर्मों के बाद भी यहाँ अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। मेरा भारत देश सत्य, अहिंसा, प्रेम, सौहार्द्र एवं सहिष्णुता जैसे आदर्शो का पालन करने वाला है। हम सब इस पर गर्व करते हैं और इसे नमन करते हैं।

विज्ञान का चमत्कार

विष्णु सरीखा पालक है, शंकर जैसा संहारक

पूजा उसकी शुद्धभाव से, करो आज से आराधक

विज्ञान का अर्थ है – विशेषज्ञान। आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान से ही मानव जाति प्रगति कर पाई है। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो विज्ञान से अछूता रह पाया हो। विज्ञान से अँधो को आँख बहरों को कान, लँगड़ों को पैर ही नही, करूप को सुंदरता भी दी है। रेल, तार मोटर, वायुयान, रेडियो, दूरदर्शन, पारदर्शक यंत्र, मोबाइल, इटंरनेट, अणुबम तथा हाइड्रोजन बम तक बना दिए हैं।

विद्युत इसका सबसे बड़ा अविष्कार है। गर्मी में सर्दी और सर्दी में गर्मी का आनन्द विज्ञान द्वारा ही लिया जा रहे है। चिकित्सा में अनेकों अविष्कार करके असाध्य रोगों का भी इलाज किया जा सकता है। यातायात के क्षेत्र में तो क्रांति ही ला दी है। मनोरंजन के क्षेत्र में भी विज्ञान पीछे नहीं रहा है। दुनिया को एक कमरे में ला दिया है। इस प्रकार विज्ञान की शक्तियां अनंत हैं, जो जन कल्याण कर रहीं हैं परन्तु साथ ही कई जगह विध्वंसकारी भी हैं सहारक अस्त्रों का निर्माण जो मानव सभ्यता को ही नष्ट कर सकते हैं।

परन्तु यदि इन्हें दोष रहित उपयोग किया जाए, इनका सद्उपयोग किया जाए तो यह विश्व को स्वर्ग बना सकते हैं देखा जाए तो यह केवल आज्ञाकारी सेवक मात्र है।

रंगों का त्योहार होली

होली भारतीय पर्वो में आनन्दोलास का पर्व है। नाचने, गाने हँसी मज़ाक मौजमस्ती करने व ईष्यो द्वेष जैसे विचारों को निकाल फेंकने का अवसर है। फाल्गुन मास की पुर्णिमा को यह त्योहार मनाया जाता है। होली के साथ अनेक दंत-कथाओं से जुड़ा हुआ है। होली की रात को आग जलाई जाती है इसके लिए एक पौराणिक कथा है कि प्रह्लाद के पिता हरिण्यक शिपु अपने भगवान मानते थे परन्तु प्रह्लाद ईश्वर भक्त थे।

जब उन्होंने यह भक्ति नहीं छोड़ी तो उनके पिता ने अपनी बहिन होलिका को प्रह्लाद के साथ आग में बैठने को कहा। होलिका को आग में न जलने का वरदान मिला था। इसलिए वह होलिका प्रह्लाद को लेकर बैठी परन्तु ईश्वर कृपा से प्रह्लाद सुरक्षित रहे और होलिका जल गई अर्थात बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए आज भी पूर्णिमा को होली जलाते हैं, और अगले दिन घुलेंडी का होता है।

सब लोग एक दूसरे पर गुलाल अबीर और तरह तरह के रंग डालते हैं। बच्चे गुब्बारे पिचकारी से रंग फेंकते हैं। परस्पर गले मिलते है मिठाई गुजियां आदि आपस में बाँटकर खाते हैं। ढोल, डफ मृंदग आदि बजा कर

नाच गाते हैं। कही मूर्ख सम्मेलन कहीं कवि सम्मेलन आदि होती हैं। परन्तु आजकल अच्छे रंगो का प्रयोग न करके रासायनिक लेपों नशे आदि का प्रयोग करके इसकी गरिमा को समाप्त किया जा रहा है। आज के व्यस्त जीवन के लिए होली चुनौती है। इसे मंगलमय रूप देकर मनाया जाना चाहिए। कवि ने कहा है – लाल-लाल बन जाते काले, गोरी सूरत पीली-नीली

मेरा देश बड़ा गर्वीला, रीति रसम ऋतु रंग रंगीली

समाचार-पत्र का महत्व

समाचार पत्रों से हमारे रोज़ाना जिन्दसी को क्या लाभ है।

संकेत बिन्दु- खबरो का दूत, ज्ञानवृद्धि का साधन, व्यापार का माध्यम

आज का मानव बड़ा ही जिज्ञासा प्रवृति का है। वह दूसरे के विचारों को जानने की जिज्ञासा तो रखता ही है, अपने विचारों को लोगों तक पहुँचाने की इच्छा भी रखता है। समाज के बारे जानने की इच्छा पूर्ति वह समाचार पत्रों के माध्यम से पूरी करता है और पूरे विश्व से अपने को जोड़ लेता है। यह कारण है कि समाचार पत्र आज मानव के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गए हैं। समाचार-पत्रों के माध्यम से हमें विश्व में घटित होने वाली घटनाओं की रातों रात छपकर सूचना मिल जाती है।

इसलिए वर्तमान युग में समाचार पत्र बैड-टी का काम करता है। समाज में होने वाले बुरे कार्य कुरीतियों का मांडा, कुप्रथाओं को हटाने का श्रेय समाचार पत्रों को ही है। समाचार पत्रों से हमारे ज्ञान की वृद्धि होती है। इनमें प्रकाशित विद्वानों के राजनीतिज्ञों के, लेखकों के लेख हमारे ज्ञान को बढ़ाते हैं। साहित्यक लेख, कहानियाँ आदि ज्ञान को तो बढ़ाते ही है साथ में मनोरंजन भी करते हैं। परीक्षा के दिनों में परीक्षापयोगी लेख व अनुमानित प्रश्न पत्र भी छपते हैं जो विद्यार्थी वर्ग के बहुत उपयोगी होते हैं।

देश में आपत काल में जनता को जाग्रत करने या धन संग्रह करने में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान है। समाचार पत्रों से बेचने खरीदने का भी काम होता है। विज्ञापन से यह काम और सरल कर लिया जाता है। ये एक सच्चे आलोचक भी होते हैं अनेकों धाँधलियों का पर्दाफाश करते हैं। अत: हमें समाचार पत्र पढ़ने की आदत डालनी चाहिए।

भारत की राजधानी दिल्ली

भारत की राजधानी दिल्ली का गौरव

संकेत बिन्दु – दिल्ली का इतिहास, औद्योगिक महत्व, जलवायु, दर्शनीय स्थान, ऐतिहासिक स्मारक, जनसंख्या

दिल्ली को 'राजधानी' बनने का गौरव सर्वप्रथम महाभारतकाल में प्राप्त हुआ। राजा युधिष्ठर ने इस इन्द्रप्रस्थ को शासन केन्द्र का प्रमुख नगर बनाया। उसके बाद चौहानों में पृथ्वीराज चौहान ने इसे राजधानी बनाया। अफगान बादशाह मुहम्मद गोरी ने भी इसे राजधानी बनाया। तुगलक, खिलजी, लोदी गुलामवंश सभी ने

दिल्ली को शासन केन्द्र रखा। मुगलों से शासन की बागडोर अंग्रेजों के हाथ में आई उन्होंने भी कलकत्ता से दिल्ली को राजधानी बनाया। फिर स्वतंत्र भारत की राजधानी के लिए भी दिल्ली को ही राजधानी के लिए चुना गया। पांडवों की राजधानी से लेकर 1947 तक इस दिल्ली ने कितने जुल्म अनाचार अत्याचार सहे हैं दिल्ली में बनी इमारतें, गुम्बद, मीनार, गलीमुहल्ले दिल्ली के उजड़ने और बसने की पहचान करा देती है।

आज दिल्ली बहुत तेजी से बढ़ रही है एक एक इंच भूमि का उपयोग हो रहा है। आलीशान कोठियों और गगन चुम्बी इमारेते भूमिगत बाजार, मेट्रो, फ्लाई ओवर स्टेडियम तथा रोशनी से झिलमिलाती सड़के इसकी सम्पन्नता पर गर्व होता है। भारत की राजधानी है दिल्ली। राजधानी के कारण है यह एक महानगर। दिल्ली का निखरता सौंदर्य उसके राजधानी होने की घोषणा करता है।

इसके दर्शनीय स्थल चाँदनी चौक, जामा मस्जिद, लाल किला कनाट प्लेस हुमायूँ का मकबरा पुराना किला कुतुबमीनार आदि हैं। व्यापारिक दृष्टि से भी यह विश्व मंडी है। देश के महापुरूषों की समाधियाँ भी यही है। आज भी दिल्ली प्रतिदिन सज रही है सँवर रही है।

मित्रता

दोस्त तो सभी होते हैं पर कौन है सच्चा मित्र

संकेत बिंदु – सच्चे मित्र की आवश्यकता, सच्चे मित्र के गुण विपत्ति में पहचान

सामाजिक प्राणी होने के नाते प्रत्येक मनुष्य को अपने विचार, अपने सुख दुख बाँटने के लिए किसी साथी की आवश्यकता रहती है। यद्यीप परिवार में सभी होते हैं परन्तु जितनी खलुकर हम अपने मित्र से बातकर सकते हैं उतनी परिवार वालों से नहीं। सच्चे मित्र का मिलना सरल नहीं होता। सच्चा मित्र वही है जो विश्वास पात्र हो और आवश्यकता पड़ने पर काम आए।

कभी कभी लोग धनवान व्यक्तियों से हो मित्रता करना पसन्द करते हैं परन्तु यदि उनका धन समाप्त हो जाए तो तुरन्त उसका साथ छोड़ देतै हैं। परन्तु सच्चा मित्र वही है जो आपत्ति में भी साथ न छोड़े जैसे कर्ण दुर्योधन की मित्रता, कृष्ण सुदामा की मित्रता।

आजकल मित्रता किसी न किसी स्वार्थ से प्रेरित होकर की जाती है। ऐसा भी हो जाता है कि मित्र सामने मीठा बोलते है और पीछे काम बिगाड़ते हैं। ऐसे मित्र विष के घड़े के समान होते हैं जिसके मुँह पर दूध लगा दिया गया हो। ऐसे मित्र को छोड़ने में ही भलाई है।

सच्ची मित्रता दैवी देन है और मनुष्य के लिए बहुमूल्य वरदान है। वह जीवन में सुख दुख का साथी है। विपत्ति की कसौटी पर जो खरा उतरे, वही सच्चा मित्र कहलाने के योग्य होता है।

कहि रहीम संपीत सगे, बनत बहुत बहु रीत

विपत्ति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत

व्यायाम के लाभ

संकेत बिन्दु-व्यायाम का महत्व, व्यायाम से शरीर तथा मन पर नियत्रंण, अनेक प्रकार के व्यायाम

हम हर कार्य स्पूर्ति और लगन से करना चाहता है परन्तु यदि शरीर स्वस्थ न हो तो वह जीवन के आनंद से वंचित हो जाता है। कहावत है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। अत: शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए नित्य व्यायाम हमारे अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। व्यक्ति कितना ही पौष्टिक भोजन खाये जब तक परन्तु जब तक खेले कूदे नहीं या व्यायाम न करें तो शक्ति सर्वधन नहीं कर सकता व्यायाम से मांसपेशियाँ मजबूत होती है। रक्त प्रवाह तेज होता है। पाचन शक्ति ठीक रहती है।

अस्थियाँ मजबूत होती हैं। पसीना आने से अनावश्यक पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाते हैं, त्वचा स्वस्थ बनती है भूख बढ़ती है और शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है। व्यायाम कई पक्रार के होते हैं जैसे प्रात:काल घुमने जाना। इससे स्वच्छ वायु का प्राणों में संचार होता है। तरह तहरह की कसरते करना, खले भी व्यायाम है, कई प्रकार के उपकरणों से व्यायाम करना योग करना सभी व्यायाम शरीर के लिए लाभकारी हैं।

अत: जीवना की सफलता स्वास्थय पर आधारित है और स्वास्थ्य व्यायाम पर। इसलिए व्यक्ति को नियमित व्यायाम करना चाहिए इससे शक्ति और सामथर्य पैदा हो जाता है शरीर सुन्दर सुडौल हो जाता है। अत: कहा गया है।

नेम से व्यायाम को नित कीजिए

दीर्घ जीवन का सुधा रस पीजिए

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

चल पडे जिधर दो उग मग में

चल पडे कोटि पग उसी ओर

भारतवासियों ने जिस महापुरूष के बताए मार्ग पर चलकर स्वतंत्रता हासिल की वह थे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी समाज सुधारक ही नही मानवता के सच्चे पुजारी थे। आपका जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई. को कठियावाड़ की राजकोट रियासत के पोरबंदर में हुआ था। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था। इनके पिता श्री करमचंद गाँधी व माता पुतली बाई थीं।

बचपन से ही घर के धार्मिक वातावरण के साथ श्रवण कुमार व सत्यवादी हरिशचन्द्र नामक नाटकों का इन पर विशेष प्रभाव पड़ा। इनका विवाह अल्पायु मे ही कस्तूरबा के साथ हो गया था। ये मैट्रिक की परीक्षा के बाद वकालात पढ़ने इग्लैंड चले गए इन्होंने अपना कार्य क्षेत्र अफ्रीका चुना किंतु यहाँ के भारतीयों की दशा से दुखी होकर अन्याय के प्रति आवाज उठाई।

अपने देश में ब्रिटिश राज्य के खिलाफ स्वतंत्रा आन्दोलन आरंम्भ किया परन्तु इनके अस्त्र थे सत्य और अहिंसा। इसके लिए वे अनेकों बार जेल भी गए असहयोग आन्दोलन, सविनय, अवज्ञा स्वदेशी आन्दोलन चला कर ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी कि अंग्रेजों को भारत छोड़ना ही पड़ा। देश कल्याण की कामना से जिसने नियुक्त भाव से प्राणों को भी त्याग दिया।

हिन्दू मुस्लिम एकता, अछूतोद्घार नारी उत्थान आदि अनेक सामाजिक कार्य भी किए इसलिए स्वतंत्रता के दीपक को जलाने वाले इस महान सेनापति को लोग 'बापू' कहने लगे। राष्ट्र ने इन्हें राष्ट्रपिता की उपाधि से विभूषित किया।

शांति और अंहिसा के इस पुजारी की 30 जनवरी 1948 को एक धर्मांध व्यक्ति नाथू राम गोडसे ने गोली मार कर हत्या कर दी। हमारा कर्तव्य है कि हम सब उनके बताए मार्ग पर चले प्रेम और भाई चारे को सदा बनाए रखे।

"सारा संसार उनके जीवित रहने से संपन्न था और उनके निधन से निर्धन हो गया।"

जल ही जीवन है

संकेत बिंदु - जल के विभिन्न स्वरूप, जल के स्रोत, मनुष्य द्वारा जल का प्रदूषण बढ़ाना।

मनुष्य की कुछ आधारभूत आवश्यकताएँ हैं। उनमें जल, भोजन और वायु निम्नलिखित हैं। इन तीनों के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। प्रकृति हमारी इन तीनों आवश्यकताओं को पूर्ण करती है। जल पृथ्वी में द्रव्य रूप में मिलता है परन्तु वाष्प और बर्फ रूप में भी पाया जाता है। मनुष्य और इस पृथ्वी के सभी प्राणियों के लिए जल जीवनदायी है। मनुष्य के शरीर में सत्तर प्रतिशत जल विद्यमान होता है।

यदि एक दिन भी वह जल नहीं पीएगा, तो उसे विभिन्न तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यह सभी प्राणियों के जीवन के लिए परम आवश्यक है। पृथ्वी में पीने योग्य जल विशाल श्रृंखलाओं में जमी बर्फ के रूप में विद्यमान है। नदियों के माध्यम से यह जल मैदानी इलाकों तक आता है। वर्षा और भूमिगत जल भी जल आपूर्ति का साधन हैं। बड़ी-बड़ी सभ्यताएँ नदियों के किनारे पर ही फली-फूली हैं।

जैसे-जैसे मनुष्य ने विकास किया है, उसने जल के स्रोतों को लगातार प्रदूषित ही किया है। मनुष्य द्वारा आरंभ से ही अपशिष्ट पदार्थों को जल में प्रवाहित किया जाता रहा है। पहले-पहल मनुष्य की आबादी बहुत ही कम थी परन्तु अब उसकी आबादी निरंतर बढ़ रही है। जल के अंदर अपशिष्ट पदार्थ से लेकर रासायनिक और विषैला कचरा तेज़ी से प्रवाहित किया जा रहा है।

इसका परिणाम यह हो रहा है कि इन स्रोतों का जल पीने योग्य नहीं रह गया है। प्रदूषित जल नदियों में बहाया जाता है और नदियों का जल समुद्र में जाकर मिलता है। इससे वन्यप्राणियों और जलीयजीवों के जीवन पर संकट उत्पन्न हो गया है। धरती पर पड़ा विषैला कचरा भूमिगत जल स्रोत को भी विषैला बना देता है। मनुष्य अपने पैर पर स्वयं ही कुल्हाड़ी मार रहा है। जल हमारे जीवन का मुख्य अंग है। हम स्वयं ही इस अंग को नष्ट कर रहे हैं। हमें अपनी इस अमूल्य निधि को बचाने के लिए प्रयास करने चाहिए।

देश प्रेम

संकेत बिंदु- देश का हमारे जीवन में स्थान, देश के प्रति हमारे कर्तव्य।

एक व्यक्ति के लिए उसका देश बहुत महत्वपूर्ण होता है। देश हमारा निवास्थान है और उससे बड़ा वह हमारा गौरव है। जहाँ लोगों के ह्दयों में देश के प्रति मान-सम्मान और प्रेम है, वह देश सदैव प्रगति के पथ पर आसीन है। उस देश के सम्मान पर कोई प्रहार नहीं कर सकता है। देश से प्रेम मात्र किताबी बातें नहीं होती हैं। देशप्रेमी व्यक्ति के व्यवहार में प्रेम स्पष्ट रूप से दिखाई दे जाता है।

भक्त सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद ने अपने देशप्रेमी होने का प्रमाण अपने प्राणों का बलिदान देकर सिद्ध किया था। देश सीमाओं से युक्त अवश्य है परन्तु उसका दायरा हर उस वस्तु प्राणी और स्थान है, जो हमारे देश में निहित है। देश की सुरक्षा के लिए हमारे सैनिक हर समय अपनी जान पर खेल जाते हैं। देश की सुरक्षा उनका मुख्य कर्त्तव्य होता है और वे उसे पूरी निष्ठा से निभाते भी हैं।

लेकिन देशप्रेम की यह परिधि नहीं है, जो मनुष्य सीमाओं में नहीं रहता परन्तु देश के अंदर रहकर उसकी हर वस्तु और संपत्ति की रक्षा करता है। वह भी एक सच्चा देशप्रेमी कहलाता है। जो लोग देश से प्यार तो अवश्य करते हैं परन्तु देश की प्राचीन धरोहरों को नुकसान पहुँचाते हैं, वे देशप्रेमी नहीं कहला सकते। देश को गंदा करने वाले और देश की ही चीज़ों को देखकर घृणा करने वाले लोग देशप्रेम शब्द को शायद ही जानते हों।

कई लोग देश में रहकर भ्रष्टाचार आदि बुराइयों में निर्लिप्त रहते हैं, वे सबसे बड़े देशद्रोही होते हैं। ऐसे लोग अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए देश को खोखला बना देते हैं। एक वही व्यक्ति सच्चा देश प्रेमी कहलाता है, जिसके अंदर दया, ममता, स्नेह, मानवता, प्रेम, सदाचार, ईमानदारी आदि गुणों का समावेश होता है। ऐसे लोग देश की हर अच्छाई और बुराई को सहर्षतापूर्वक स्वीकार करते हैं।

वे प्रयास करते हैं कि बुराई को समाप्त किया जा सके और अच्छाई को और भी संवारा जा सके। यदि हम अपनी छत को ही तोड़गें तो दूसरों से सुरक्षा की आशा लगाना व्यर्थ है। अत: देशप्रेम का प्रमाण देश की रक्षा, उससे जुड़ी हर वस्तु की देखभाल करना है।

परोपकार

संकेत बिंदु- परोपकार की परिषाभा, परोपकार का महत्व।

मनुष्य जीवन बहुत-सी संभावनाओं से भरा होता है। परन्तु मनुष्य से सदैव यही आशा की जाती है कि वह अपने कर्त्तव्यों के साथ-साथ परहित भी करता रहे। हमारे धर्मग्रंथों में इसे परोपकार कहा जाता है। यह शब्द

पर + उपकार दो शब्दों से मिलकर बना है। परन्तु इसके अंदर जो भावना निहित है, वह बहुत शक्तिशाली और सुंदर है। मनुष्य अपना पूरा जीवन अपने लिए सुख-सुविधाएँ और धन संचय करने में लगा देता है। परोपकार की भावना उसे स्वार्थ की भावना से अलग करती है। यही मनुष्य के द्वारा किया गया पुण्य है और

उसका धर्म भी है। जो व्यक्ति स्वहित छोड़कर परहित के लिए अपना बलिदान देता है। संसार उसके आगे नतमस्तक हो जाता है। अपने आसपास देखें, तो पाएँगे वृक्ष परोपकार का सबसे बड़ा उदाहरण हैं। रहीम ने बड़े सुंदर शब्दों में वृक्ष के परोपकार का वर्णन किया है। वह कहते हैं-

तरूवर फल नहीं खात है, सरवर पियत न पान।

कहि रहीम परकाज हित, संपत्ति-सचहिं सुजान।

इससे यह सिद्ध होता है कि परहित और परोपकार से बड़ा कोई धन नहीं है। महात्मा गांधी ने देश के विकास और आज़ादी के लिए बहुत कार्य किए। भगतसिंह ने देश के लिए स्वयं के प्राणों का बलिदान किया। उनका किया हुआ बलिदान देश के भविष्य के लिए मील का पत्थर साबित हुआ और भारत आज़ाद हो गया। संपत्ति द्वारा दुखियों की सेवा करना भी परोपकार का ही रूप है।

परन्तु बलिदान परोपकार का आदर्श रूप है। परोपकार मनुष्य को मनुष्यता से बहुत ऊपर उठाकर भगवान के समतुल्य बैठा देता है इसलिए परोपकार को श्रेष्ठ कहा गया है। सभी धर्मों का निचोड़ कहता है, परोपकार ही जीवन का आधार है । दूसरों की सेवा करो और ऐसे कार्य करो जिससे किसी को सुख प्राप्त हो सके, तो तुम्हारा जीवन तभी सफल माना जाएगा।

मेरी शरारत पर मिला विचित्र दण्ड

संकेत बिंदू- अपने व्यक्तित्व का वर्णन, अपने द्वारा की गई शरारत, उस शरारत पर मिला दण्ड।

बात उस समय कि है, जब में आठवीं कक्षा में नया-नया गया था। मैं बहुत ही शरारती और उदण्ड था। माता-पिता और दादा-दादी के असीम प्यार ने मुझे उदण्ड बना दिया था इसलिए मैंने वहाँ जाते ही शरारतें आरंभ कर दी। नए विद्यालय में मेरी कक्षा अध्यापिका का नाम पूनम मदान था। वह विज्ञान की अध्यापिका थीं और बहुत ही विनम्रशील थीं।

मैंने मन ही मन सोचा कि मैं क्यों न आज अपनी कक्षा अध्यापिका को ही तंग करूँ। अगले दिन मैंने कक्षा में आकर श्यामपट (ब्लैक बोर्ड) पर उनका विचित्र-सा दिखने वाला कार्टून बना दिया। मैं चित्र बहुत अच्छा बनाता था। सभी बच्चे उनका कार्टून देखकर हँसते रहे। कुछ समय बाद वह भी कक्षा में आ गईं। अपना इस प्रकार का चित्र बना देखकर उन्होंने चित्र बनाने वाले का नाम बताने को कहा।

सभी बच्चों ने मेरा नाम बता दिया। अपनी उदण्डता पर मैं ज़रा भी लज्जित नहीं था। उन्होंने मुझे दण्ड के तौर पर विज्ञान से संबंधित बीस चित्र बनाने के लिए दिए। वह मुझे अपने साथ ले गईं और दो दिन तक अपने पास बैठाकर चित्र बनवाती रहीं। अगले दो दिनों में होने वाले विज्ञान सत्र के लिए उन्हें चित्र बनवाने थे। उन्हें कोई नहीं मिल रहा था। मेरी चित्रकारी देखकर उन्होंने मुझसे ही चित्र बनाने का निर्णय लिया।

चित्र बनाते-बनाते मेरी दशा खराब हो गई। मैंने इस प्रकार के निराले दण्ड की कल्पना भी नहीं की थी। विज्ञान सत्र में हमारे विद्यालय के चित्रों को प्रथम स्थान मिला। परन्तु उनके दण्ड ने मुझे एक नया सबक सिखाया और मैंने दुबारा कभी शरारत नहीं की आने वाले वार्षिक उत्सव में मुझे उन चित्रों के लिए प्रथम

पुरस्कार मिला। मेरी अध्यापिका ने मेरी शरारत का उत्तर शरारत से दिया और मेरे जीवन को नई दिशा भी प्रदान की। यदि हर अध्यापिका मेरी अध्यापिका जैसा मार्ग निकाले तो कोई शरारत ही न करें।

भारतीय किसान

संकेत बिंदू- भारत में कृषि की भूमिका, किसान और उसका परिश्रम, देश में उसकी अनदेखी।

भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। हमारे देश की समृद्धि और सपन्नता का मुख्य श्रेय कृषि को ही जाता है। भारत में कृषि का बहुत ही महत्व है। यह कृषकों की धरती है। हमारी सत्तर प्रतिशत जनसंख्या गाँवों की है। हमारे देश में किसान को आदर की दृष्टि से देखा जाता है। हमारे देश की समस्त खाद्यापूर्ति संबंधी आवश्यकताएँ किसानों द्वारा पूरी की जाती है।

उनके द्वारा ही अन्न, सब्जियाँ, फल इत्यादि उगाए जाते हैं। भारतीय किसान पूरा-पूरा साल खेतों में अन्न और अन्य वस्तुओं को बोने में लगा देता है। हर मौसम में वह अलग-अलग प्रकार की खाद्य सामग्री उगाता है। उसका जीवन अत्यन्त श्रम से युक्त होता है। एक किसान को विश्राम का सुख ही नहीं मिलता है। प्रात:काल से उसकी दिनचर्या आरंभ होती है और देर रात तक चलती रहती है।

वह साधारण जीवन व्यतीत करता है। पूरे देश के लिए भोजन उपलब्ध करवाने वाले ये किसान सादी रोटी में ही जीवनयापन करते हैं। उसके लिए भोजन के स्थान पर अपना काम ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। यदि उसका कार्य समय पर पूरा नहीं हुआ, तो मौसम की मार उसके श्रम पर पानी फेर सकती है। यही चिंता उसके जीवन को व्यस्त बनाए रखती है। इतने कठोर श्रम के बाद भी उसे कुछ लाभ नहीं मिलता।

उसे अपनी उपज बाज़ार में बहुत कम कीमतों में बेचनी पड़ती है और दलाल इसका अधिक लाभ उठाते हैं। किसान कठोर, परिश्रम, संयमी, निष्ठावान और उद्यमी व्यक्ति होता है। वह देश का अन्नदाता है और देश का गौरव भी। हमें उसके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। इतने कठोर परिश्रम के बाद भी वह सदैव हँसता रहता है। संतोष की रेखा उसके चेहरे को तेज़वान बनाती हुई हमें प्रेरणा देती है।

लड़कियों की संख्या कम होने पर भारतीय समाज का स्वरूप

संकेत बिंदु- कन्या भ्रूण को मरवाने के कारण, इसके दुष्परिणाम।

लड़कों की चाहत में लोग कन्या भ्रूण को गर्भ में ही मरवा देते हैं। उन्हें बस पुत्र की कामना होती है। लड़की का जन्म उनके लिए परेशानियों का कारण होता है। किसी घर में यदि दो बेटों के बाद एक बेटी हो जाए, तो भी लोग प्रसन्न नहीं होते। लोग लड़के की कामना में तब तक गर्भपात करवाते रहते हैं, जब तक की भ्रूण लड़का न हो।

हम इस सत्य को नज़र अंदाज़ कर देते हैं कि पुत्र कामना के चक्कर में हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए विषमताएँ पैदा कर रहे हैं। प्रकृति ने अपनी बनाई दुनिया में संतुलन कायम किया हुआ है। परन्तु हमने उसके संतुलन को सदैव नष्ट ही किया है। जितने लडकों का जन्म होता है, उसके पीछे उतनी ही लड़कियों का भी जन्म होना आवश्यक है। इस तरह दोनों की संख्या में संतुलन कायम होता है। विवाह

परंपरा परिवार को बढ़ाने और जीवनसाथी का साथ पाने के लिए की जाती है। परन्तु यदि लड़के ही जन्म लेते रहेंगे, तो भविष्य में इनके बीच बहुत बड़ा असंतुलन पैदा हो जाएगा। लड़कों को विवाह के लिए कन्या ही नहीं मिलेगी। इसके कारण घर परिवार की बढ़ोतरी नहीं होगी। जिस वंश को चलाने के लिए लोग पुत्र कामना करते हैं। उनका ही वंश समाप्ति की कगार पर आ जाएगा।

जो बची हुई लड़कियाँ होगीं, उन्हें भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। उनकी अस्मिता के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ेगा। समाज में अराजकता और हिंसा का बोलबाला हो जाएगा। लोग लड़कियों की कमी को समझना आरंभ कर देंगे। परन्तु तब परिस्थितियाँ उनके हाथ से निकल चुकी होंगी।

जो लोग पुत्र होने पर गर्व महसूस करते हैं, उन्हें विवाह योग्य कन्या के लिए जगह-जगह हाथ फैलाना पड़ेगा। हमें चाहिए कि इस तरह की समस्या आने से पहले उस समस्या को समाप्त कर दिया जाए।

लोकगीतों की विशेषताएँ

संकेत बिंदु- लोकगीत की परिभाषा, लोकगीत का भारत में स्वरूप, लोकगीत का जीवन में महत्व।

लोकगीत नाम से ही उसकी पहचान सबको पता चल जाती है। लोकगीत का अर्थ होता है, लोगों के गीत। लोकगीत अपनी ताज़गी, लोच व मस्ती के कारण गाँव में गाए जाते हैं। आपको त्योहारों, विवाह, नामकरण संस्कार, उत्सव आदि के लिए अलग-अलग गीत मिल जाएँगे। शहरों की तुलना में गाँवों व देहातों में ये अपनी छटा बिखेरते हुए दिखाई देते हैं।

बस अवसर होने की देर होती है और ये गाँवों व देहातों के खेतों, मौहल्लों, बागों, नदियों आदि स्थानों में आनंद के स्वर बिखेर देते हैं। लोकगीत का शास्त्रीय संगीत से कोई संबंध नहीं है। ये उनसे बिलकुल ही अलग रूप लिए हुए हैं। जहाँ शास्त्रीय संगीत के लिए मनुष्य अपने बाल्यकाल से ही गहन शिक्षा लेना आंरभ कर देता है, वहीं लोक गीत तो बस साथ व ताल के होने से ही अपने-आप फूटने लगते हैं।

शास्त्रीय संगीत जहाँ देश को संबोधित करते हैं, वहीं लोकगीत देश के हर छोटे-बड़े गाँव व देहातों को संबोधित करते हैं। इनका निर्माण गाँव की मिट्टी से हुआ है। ये लोकगीत वहाँ के लोगों के आनंद, प्रेम और जीवन का प्रतीक हैं। भारत के हर कोने-कोने में लोकगीत गाए जाते हैं। फिर चाहे उत्तर भारत हो या दक्षिण भारत, पूर्वी भारत हो या पश्चिमी भारत, इनका संबंध देश के हर कोने से है।

लोकगीतों को अपनी पहचान बनाने में लंबा समय लगा। परन्तु आज ये अपने स्वरूप के साथ लोगों के दिलों में अपने लिए स्थान बना चुके हैं। विभिन्न बोलियों व भाषा में होने के कारण ये बड़े आनंददायक और आह्लादकर हैं। राजस्थानी तथा पंजाबी के लोकगीत वहाँ से निकलकर आज शहरों में अपनी पहचान बना चुके हैं।

इन गीतों की रचना के पीछे स्त्रियों का योगदान माना जाता है। सुख, दुख और आनंद को दर्शाने के लिए स्त्रियाँ लोकगीतों का सहारा लेती है। इन लोकगीतों स्वरूप बहुत विशाल है। यह पूरे भारत की आत्मा है। इनके साथ ही आनंद, मस्ती व प्रेम का वातावरण जाग्रत हो जाता है। थके पाथिक के लिए यह घने सघन वृक्ष की छाया के समान है।

साक्षरता वरदान, निरक्षरता है अभिशाप

संकेत बिंदु- शिक्षा का जीवन और देश में महत्व है, शिक्षा के पढ़ने वाले सकारात्मक प्रभाव।

शिक्षा का मनुष्य जीवन में बहुत महत्व है। मनुष्य को शिष्ट और सभ्य बनाने में शिक्षा की ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा मनुष्य के साथ-साथ समाज और देश का विकास भी करती है। देश में साक्षरता की दर जितनी अधिक होगी, देश की प्रगति की गति भी उतनी ही तेज़ी से बढ़ेगी। साक्षरता में मनुष्य का सच्चा सुख है, निरक्षरता तो जीवन के दुखों का कारण होती है। अंग्रेज़ों ने भारत में अपनी जड़ें ही इसलिए जमाई थीं क्योंकि यहाँ अंधविश्वास, अज्ञानता और निरक्षरता का बोलबाला था।

अंग्रेज़ भारतीय सभ्यता की कमज़ोर कड़ी को पहचान गए थे और उन्होंने उसी पर प्रहार किया। धीरे-धीरे भारत गुलाम बन गया। आगे चलकर उन्हें पूरे देश पर एकाधिकार रखने के लिए और शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता हुई। आखिरकार हारकर उन्होंने भारत में शिक्षा का आधुनिक रूप आरंभ किया। जैसे ही भारत में शिक्षा का प्रसार आरंभ हुआ, ब्रिटिश शासन की जड़ें कमज़ोर होने लगी।

भारत में शिक्षा के कारण लोगों के विचारों में बदलाव आने लगा। संकीर्णता और अंधविश्वास समाप्त हो गए और देश आज़ादी के पथ पर अग्रसर हो गया। इस बात से हम शिक्षा के महत्व का मूल्यांकन कर सकते हैं। शिक्षा देश के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक उत्थान के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा से ही मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होता है। विचारों में बदलाव और वस्तुओं को गहराई से समझने का माध्यम शिक्षा है। साक्षरता विकास और स्वतंत्रता का प्रतीक है।

इसके विपरीत निरक्षरता जीवन को अंधकार रूपी कुएँ में ढकेल देती है। मनुष्य शिक्षा के अभाव में दुर्बल, निसहाय, अंधविश्वासी आदि दुर्भावनाओं से ग्रसित हो जाता है। अशिक्षित व्यक्ति अपना और देश का विकास नहीं कर पाता। इसका परिणाम यह होता है कि उसका जीवनस्तर निम्न बना रहता है। निरक्षरता उसके सभी मार्ग बाधित कर देती है। यह वह अभिशाप है, जिससे साक्षरता रूपी वरदान द्वारा ही बचा जा सकता है। अत: हमें साक्षर होने की ओर कदम बढ़ाना चाहिए।

हम और विदेशी वस्तुओं का लोभ

संकेत बिंदु- देश में विदेशी वस्तुओं के प्रति बढ़ता आकर्षण, लोगों में अंधी दौड़, इसके दुष्परिणाम।

देश में विदेशी वस्तुओं का चलन तेज़ी से बढ़ गया है। हर कोई विदेशी ब्रांड की वस्तुओं को खरीदने में गौरव का अनुभव करता है। विदेशी वस्तुओं की चमक-दमक ने लोगों को अंधा बना दिया है। वे विदेशी वस्तुओं की खरीदारी पर अंधाधुंध धन व्यय करते हैं। उनके पास दूसरे से अच्छी और मंहगी वस्तु होनी चाहिए। अंग्रेज़ों के आगमन से ही विदेशी वस्तुओं ने भारत में अपनी पैठ बनानी आरंभ कर दी थी।

उसी समय से लोगों ने विदेशी रहन-सहन, जीवनशैली और वस्तुओं के प्रति प्रेम दिखाना आरंभ कर दिया था। स्वतंत्रता के बाद भी ये प्रेम समाप्त नहीं हुआ और आज हालात ये हैं कि लोग विदेशी वस्तुओं का प्रयोग बड़ी प्रसन्नता से करते हैं। अपने को सुंदर बनाने के लिए स्त्रियाँ सौन्दर्य-प्रसाधनों का प्रयोग करती हैं,

जो विदेशों की देन है। विदेशी वस्तुओं का लोभ इस बात का प्रमाण हैं कि लोग पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण अंधों के समान कर रहे हैं। अपने देश में बनी चीज़ों की गुणवत्ता पर उनको विश्वास ही नहीं रह गया है। हमने यह मान लिया है कि विदेश में बनी हुई वस्तु सबसे अच्छी है। हम पाश्चात्य जगत के जैसा होने का प्रयास करते हैं। हमारी संस्कृति का स्वरूप इसी कारण विकृत हो रहा है।

हम पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण करते हैं और अपनी सभ्यता का रूप बिगाड़ रहे हैं। हमें यूरोपियों की तरह पहनना, खाना-पीना, जीवन जीने का ढंग अच्छा लगता है। उनकी चमकभरी जिंदगी हमें प्रभावित करती है। ये प्रभाव हमें उनके समान दिखने के लिए विवश कर देता है। हम उनकी तरह नकल करते हैं और चीज़ों को खरीदते जाते हैं।

विदेशी कपड़े, जूते, इत्र, सौंदर्य प्रसाधन इत्यादि खरीदने में शान मानते हैं और अपना धन विदेशों में भेजते हैं। इस तरह से हम देश को फिर से गुलामी की तरफ धकेल रहे हैं। इनके प्रति हमारा लालच हमें एक दिन ले डूबेगा। तब शायद कोई और गांधी हमारे पास नहीं आएगा, हमें गुलामी से बचाने को।

हमारी प्यारी दिल्ली

संकेत बिंदु- दिल्ली का इतिहास, दिल्ली का आज का स्वरूप।

दिल्ली भारत की राजधानी है। भारत के मानचित्र में दिल के स्थान पर होने के कारण यह भारत का दिल भी कही जाती है। दिल्ली हर भारतीय के दिल में बसती है। दिल्ली ऐतिहासिक स्थानों से भरपूर है। इसके पीछे मुख्य कारण इसकी सशक्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि होना है। प्राचीनकाल से ही दिल्ली कई राजाओं की राजधानी रहने का सौभाग्य प्राप्त कर चुकी है।

हिन्दु राजाओं, मुगलशासकों और अंग्रेज़ी सरकार के शासन का मुख्य केंद्र भी रही है और यही कारण है इसके अंदर हर शासन के प्रतीक चिह्न जगह-जगह दिखाई दे जाते हैं। चिड़ियाघर के समीप स्थित पांडव किला जहाँ इन्द्रपस्थ के रूप में पांचों पाडवों की याद दिलाता है, वहीं महरौली में स्थित कुतुबमीनार मुस्लिम राजाओं की बढ़ती शान का प्रतीक है। जामा-मस्जिद, लाल-किला, हुमायूँ का मकबरा, लोधी का मकबरा, चाँदनी चौक, सफ़दरजंग एवं निज़ामुद्दीन के मकबरे आदि मुगलशासन काल की संपन्नता, सुख और समृद्धि को दर्शाते हैं।

राष्ट्रपति भवन, इंडिया गेट, संसद भवन आदि इमारतें ब्रिटिश शासन काल के समय की गवाही देते नज़र आ जाते हैं। ब्रिटिश शासन काल से लेकर आज तक यह निरंतर भारत की राजधानी रही है जोकि महत्वपूर्ण बात है। भारत सरकार पूरे देश की देखरेख यहीं से करती है। नई दिल्ली दिल्ली का नवीनतम रूप है। यहाँ गगनचुंबी इमारतें इसकी भव्यता में चार चाँद लगाती हैं।

दिल्ली में आधुनिकता और प्राचीनता का सुंदर रूप देखने को मिलता है। जहाँ ऐतिहासिक इमारतें विद्यमान हैं, वहीं मेट्रो इसका आधुनिक रूप प्रदर्शित करती है। सभी देशों के मुख्यालय भी यहीं पर स्थित हैं। दिल्ली का क्नाट प्लेस, दिल्ली हाट आदि प्रसिद्ध स्थल हैं, जहाँ मौज-मस्ती की जा सकती है। दिल्ली में सभी धर्मों और संस्कृतियों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। दिल्ली इतिहास के एक-एक पन्ने को अपनी ज़ुबानी स्वयं कहती है।